• पूजा...

## हरी साड़ी और हरी चूड़ी

कहा जाता है कि विवाहित महिलाएं ये व्रत परिवार की खुशहाली और कुंवारी कन्याएं मनचाहे जीवनसाथी के लिए करती हैं। इस दिन महिलाएं एक स्थान पर इकट्ठा होकर नाचती हैं, गाती हैं और खुशियां मनाती हैं। इस दिन महिलाएं हरे रंग की साड़ी और हरी चूड़ियां विशेष रूप से पहनती हैं। ये एक परंपरा-सी बन गई है। इस परंपरा के पीछे वैसे तो कोई धार्मिक कारण नहीं है, लेकिन इसका मनोवैज्ञानिक पक्ष जरूर है।

ये हैं भगवान शिव का प्रिय रंगः हरियाली अमावस्या पर भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा विशेष रूप से की जाती है। हरा रंग भगवान शिव को भी अति प्रिय है। पूजा के दौरान महिलाएं माता पार्वती को भी हरी चूड़ियां अर्पित करती हैं। कहा जाता है कि हरा रंग पति और पत्नी के बीच प्रेम की बढ़ाता है। ये रंग सुहाग का प्रतीक भी माना जाता है। हरियाली तीज पर हरा रंग पहनने से वैवाहिक सुख में वृद्धि होती है।

▶ **बुध ग्रह का रंग है हरा :** ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, हर ग्रह

एक विशेष रंग का प्रतिनिधित्व करता है। इसी क्रम में बुध ग्रह का रंग हरा है। ऐसा कहा जाता है कि जिन लोगों की कुंडली में बुध ग्रह अशुभ स्थिति में हो, उन्हें हरे रंग के कपड़े पहनने चाहिए। जिससे कि इन्हें बुध ग्रह से संबंधित शुभ फल मिल सकें। ये ग्रह बुद्धि और वाणी का कारक भी है। ये ग्रह शुभ फल देता है तो व्यक्ति अपनी वाणी से सबको प्रसन्न कर देता है। इसलिए हरियाली अमावस्या पर महिलाएं इस रंग की कपड़े पहनती हैं ताकि मीठी बातें बोलकर अपने पति का दिल जीत सकें।

▶ **लाइफ मैनेजमेंट से भी जुड़ा है ये रंगः** सावन में प्रकृत भी हरियाली की चादर ओढ़कर सबका स्वागत करती है। हरे भरे पेड़ पौधे आंखों को सुकून देने का काम करते हैं। ये वो समय होता है जब लोगो प्रकृति को अपने आस-पास महसूस कर सकते हैं और उसका महत्व समझ सकते हैं। इसलिए इस दौरान ऐसे आयोजन किए जाते हैं कि लोग प्रकृति के निकट जा सकें और उसका महत्व भी समझें।

• तीज पर...

## क्या करें और क्या नहीं

सनातन धर्म में हरियाली तीज के पर्व का विशेष महत्व बताया गया है। पंचांग के हिसाब से सावन माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हरियाली तीज का व्रत किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस पावन अवसर पर भगवान शिव और माता पार्वती की

पूजा-अर्चना विशेष रूप से करने का विधान है। इस व्रत को विशेषकर सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती हैं। हरियाली तीज का व्रत अविवाहित महिलाएं मनचाहा वर पाने के लिए रखती हैं। हरियाली तीज के दिन विशेष रूप से हरे रंग के वस्त्र पहनने की मान्यता है। अब ऐसे में हरियाली तीज के दिन सौभाग्य प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

▶▶ **हरियाली तीज के दिन क्या करना चाहिए**- हरियाली तीज सुहागिन महिलाओं के लिए विशेष महत्व रखता है। यह पति-पत्नी के बीच प्रेम और स्नेह का प्रतीक है। इस दिन महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती से सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करती हैं।

▶▶ हरियाली तीज के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा विशेष रूप से करें।

▶▶ हरियाली तीज के दिन व्रत करने वाली महिलाएं उन्हीं सामग्री का इस्तेमाल करें जो उन्हें मायके से दी गई है।

▶▶ हरियाली तीज के दिन व्रती महिलाएं जमीन पर ही सोएं।

▶▶ हरियाली तीज के दिन हरे रंग के वस्त्र जरूर पहनें। साथ ही इस दिन सोलह श्रृंगार करने का विशेष महत्व है।

▶▶ हरियाली तीज के दिन मेंहदी लगाने की परंपरा है। इसलिए महिलाएं मेंहदी जरूर लगवाएं।

▶▶ **हरियाली तीज के दिन क्या नहीं करना चाहिए**- हरियाली तीज के दिन व्रती महिलाएं खासकर हरे रंग के वस्त्र पहनें। इस दिन काले, भूरे या फिर सफेद रंग के वस्त्र भूलकर भी नहीं पहनना चाहिए।

▶▶ हरियाली तीज के दिन सुहागिन महिलाएं काले रंग की चूड़ियां भी पहनने से बचें। इस दिन हरे रंग की चूड़ियां विशेष रूप से पहनने की मान्यता है। बता दें, हरा रंग खुशियों और पति की लंबी उम्र का प्रतीक माना जाता है।

▶▶ हरियाली तीज के दिन व्रती महिलाएं अपनी पति से लड़ाई-झगड़ा करने से बचें।

▶▶ अगर आप हरियाली तीज का सामान खरीद रही हैं, तो मंगलवार के दिन खरीदने से बचें।

▶▶ हरियाली तीज के दिन व्रती महिलाएं सोने से बचें। इस दिन भजन-कीर्तन करें।

▶▶ हरियाली तीज के दिन भूलकर भी जल या फिर दूध का सेवन करने से बचना चाहिए। साथ ही तीज व्रत पारण से पहले न खोलें। इससे व्रत का पूर्ण फल नहीं मिलता है।

हरियाली तीज के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा विधिलत रूप से करने का विधान है। इस दिन जो महिलाएं व्रत रखती हैं और पूजा-पाठ करती हैं। उन्हें अखंड सौभाग्य का वरदान मिलता है। हरियाली तीज सुख-समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक है। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना करने से सुहागिन महिलाओं का दांपत्य जीवन भी सुखमय रहता है।

## नाग पंचमी

**यह दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को आता है, जो साल 2024 में 9 अगस्त को है। इस दिन नाग देवता की पूजा करने से कुंडली में मौजूद कालसर्प दोष दूर होता है और साथ ही परिवार में सुख-शांति और समृद्धि आती है।**

**इसके साथ ही पैसों से जुड़ी समस्याओं का निवारण भी होता है। ऐसे में आज हम बताएंगे कि नाग पंचमी की पूजा विधि क्या है और इससे क्या-क्या लाभ आपको प्राप्त हो सकते हैं...**

नाग पंचमी हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे नाग देवता की पूजा के लिए बेहद शुभ माना जाता है। यह दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को आता है, जो साल 2024 में 9 अगस्त को है। इस दिन नाग देवता की पूजा करने से कुंडली में मौजूद कालसर्प दोष दूर होता है और साथ ही परिवार में सुख-शांति और समृद्धि आती है। इसके साथ ही पैसों से जुड़ी समस्याओं का निवारण भी होता है। ऐसे में आज हम बताएंगे कि नाग पंचमी की पूजा विधि क्या है और इससे क्या-क्या लाभ आपको प्राप्त हो सकते हैं।

**नाग पंचमी की पूजा विधि**

● **स्नान और शुद्धिकरण :** नाग पंचमी के दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल और घर को स्वच्छ और पवित्र करें।

● **पूजा स्थल को ऐसे करें तैयार :** घर के पूजा स्थल को अच्छे से सजाएं। वहां पर नाग देवता की मूर्ति या चित्र स्थापित करें या फिर आप चांदी से बना नाग नागिन का जोड़ा भी रख सकते हैं।

● **पूजा सामग्री :** पूजा के लिए दूध, चावल, चंदन, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक और नैवेद्य (मिठाई) की व्यवस्था पहले ही कर लें।

● **नाग देवता का अभिषेक :** नाग देवता की मूर्ति या फिर नाग-नागिन के जोड़े को दूध, पानी और गंगा जल से स्नान करवाएं।

● **पुष्पांजलि :** नाग देवता की मूर्ति या तस्वीर पर चंदन का लेप करें और पुष्प उन्हें अर्पित करें।

● **धूप-दीप :** इसके बाद धूप और दीपक जलाकर आपको नाग देवता की आरती करनी चाहिए। आरती के दौरान ऊं नमः शिवाय और ऊं नागेंद्राय नमः मंत्र का जाप करें।

● **नैवेद्य :** नाग देवता को नैवेद्य (मिठाई) अर्पित करें। विशेष रूप से दूध और लड्डू का भोग इस दिन आपको नाग देवता को लगाना चाहिए।

● **मंत्र जप :** नाग पंचमी के दिन 'ऊं कुरुकुल्ये हुं फट स्वाहा' मंत्र का जप करना शुभ माना जाता है। इस मंत्र का कम से कम आपको 108 बार जाप करना चाहिए।

इस विधि से अगर आप नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा करते हैं तो कई शुभ परिणाम आपको जीवन में प्राप्त हो सकते हैं।

**नाग पंचमी की पूजा के लाभ**

● **पैसों से जुड़ी परेशानियां होती हैं दूर :** नाग देवता की पूजा से पैसों से जुड़ी समस्याएं दूर होने लगती हैं। आपका धन संचित होने लगता है और आप जीवन में प्रगति करते हैं।

● **घर में आती है सुख-शांति :** नाग पंचमी पर नाग देवता की पूजा करने से काल सर्प दोष दूर होता है और साथ ही परिवार में सुख-शांति बनी रहती है। नाग देवता की पूजा से भगवान शिव भी प्रसन्न होते हैं।

● **वास्तु दोष होता है दूर :** नाग देवता की पूजा करने से घर में सकारात्मकता आती है और वास्तु दोष दूर होती है।

● **नाग पूजन से स्वास्थ्य और सुरक्षा होती है प्राप्त :** ऐसा माना जाता है कि विधि-विधान पूर्वक नाग देवता की पूजा करने से सर्पदंश और अन्य जहरीले जीवों से सुरक्षा मिलती है। साथ ही आपके स्वास्थ्य में भी अच्छे बदलाव आते हैं।

● **धन-संपत्ति में वृद्धि :** नाग पंचमी पर विधिपूर्वक जो भी लोग नाग देवता की पूजा करते हैं उनके जीवन में धन संपत्ति की कमी नहीं रहती।

नाग पंचमी का पावन पर्व हमें नाग देवता की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। अगर इस दिन आप सही विधि से नाग देवता की पूजा करें तो आपको जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• सावन में...

## शिव पूजा

सावन मास भगवान शिव को समर्पित है। मान्यता है कि इन दिनों में भक्तिभाव से शिव आराधना करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। भोले बाबा सभी देवो में सबसे सरल और भोले माने गए हैं। माना जाता है कि सावन में शिव जी का व्रत रखने से कुंवारी कन्याओं को मनचाहा वर और कुवारें लड़कों को मनचाही वधु की प्राप्ति होती है। देवी-देवताओं की खंडित मूर्तियां घर में नहीं रखनी चाहिए, लेकिन शिवलिंग रख सकते हैं, क्योंकि शिवलिंग को निराकार स्वरूप माना गया है। इस कारण इसे खंडित नहीं माना जाता है। टूटा शिवलिंग भी पूजनीय होता है। ध्यान रखें घर में ज्यादा बड़ा शिवलिंग नहीं रखना चाहिए। घर में छोटा शिवलिंग रखना शुभ रहता है। हमारे अंगूठे के पहले पोर से बड़े आकार का शिवलिंग घर में रखने से बचना चाहिए। शिवजी के साथ ही गणेश जी, माता पार्वती, नंदी की भी मूर्तियां जरूर रखें। पूजा की शुरुआत गणेश पूजन से करना चाहिए।

• महामृत्युंजय मंत्र...

**सावन में महामृत्युंजय मंत्र की शक्ति और भी बढ़ जाती है। धर्म ग्रथों और शास्त्रों की मानें तो महामृत्युंजय मंत्र का जप करने से अनेक रोगों से मुक्ति मिल सकती है। पापों से छुटकारा मिलता है। महामृत्युंजय मंत्र के अक्षरों का विशेष स्वर के साथ उच्चारण किया जाए तो उससे उत्पन्न होने वाली ध्वनी से शरीर में कंपन होता है, जिससे हमारे शरीर में एक सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह पैदा होता है और वो हमारे शरीर की नाड़ियों को शुद्ध करने में मदद करता है।**

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित